राजा दिनेश सिंह कृषि विज्ञान केन्द्र

अवधेशपुरम् (ऐंठू), कालाकॉकर, प्रतापगढ़

जाड़े के मौसम में पशुओं की देखभाल

डा0 राजेश कुमार

बदलते मौसम के समय प्रायः कम उम्र के पशुओं, कमजोर गायों तथा संकर एवं विदेशी नस्ल की गायों को ठंड लग जाती है। इससे नाक, ऑख से पानी आना, भूख कम हो जाना, शरीर के रोयें खड़े रहना तथा पशु का कॉपना आदि प्रमुख लक्षण हैं। पशु को खुला छोड़ देने पर पशु ढॉसता है, स्वास लेने में कठिनाई होता है एवं बुखार भी आ जाता है। ध्यान न देने पर पशु को न्यूमोनिया हो जाता है।

अतः आवश्यक है कि ठंड शुरू होते ही पशु पर ध्यान देना चाहिए ताकि पशुओं को ठंड न लगने पाये। इसके लिए पशुपालकों को निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए।

- जाड़े के मौसम में पशुओं को ठण्ड से बचाने के लिए शाम होते ही घर के अन्दर बांधना चाहिए। ऐसा प्रबन्ध रखें कि पशु को सीधे हवा के झोके न लगे।
- पशु के बांधने के स्थान पर पुवाल या सूखी पत्तियों का विछावन डाल दें और इसे समय–समय पर बदलते रहें।
- शर्दी से बचाने के लिए पशु के शरीर को मोटे कपड़े या जूट के बोरा के झोल या कम्बल डालकर ढक देना चाहिए।
- यदि ठंड बहुत अधिक हो तो पशु के आस पास सावधानी के साथ आग जला देना चाहिए। आग द्वारा कमरा गरम करते समय कमरे की खिड़कियां या रोशनदान खोल कर रखें, अन्यथा ऐसा करना नुकसानदायक हो सकता है।
- पशु को खनिज लवण के साथ नमक और अनाज कुल चारा के शुष्क भार का 10–15 प्रतिशत तक जाड़े में अतिरिक्त ऊर्जा जरूरत को पूरा करने के लिए देना चाहिए।
- 10 प्रतिशत अतिरिक्त चारा खिलाना चाहिए। ऐसा माना जाता है कि प्रत्येक 2 डिग्री फारेनहाइट तापमान कम होने पर 1 प्रतिशत चारा बढ़ा देना चाहिए।
- बछड़े एवं बछड़ियों पर अतिरिक्त ध्यान दें, उसे घर में बांधकर खिलाएं और सुबह में चरने के लिए नहीं भेजें।
- पशुओं को साफ और ताजा पानी पिलायें, यदि हो सके तो गुनगुना पानी पिलायें। बासी पानी नहीं पिलायें।
- पशु के शरीर को जूट के बोरा या ग्रूमिंग ब्रश से रगड़ें तांकि शरीर में खून का प्रवाह तेज हो जाये और पशुओं को अधिक ऊर्जा मिले।
- पशु के शरीर को स्वस्थ रखने के लिए उसे दूसरे–चौथे दिन स्वच्छ पानी से नहलायें।
- गन्दगी अनेक रोगों की जड़ है, इसलिए उसके बांधने के स्थान के आस–पास की जगह को साफ–सुथरा रखें।

इसके अतिरिक्त पशु के बांधने का स्थान गड्ढेदार या समतल नही रखना चाहिए क्योंकि ऐसे स्थान में पशु का मलमूत्र थोड़ा बहुत अवश्य भरा रहता है, जिसके कारण वहॉ पर दलदल सा हो जाता है। इसलिए पशु के बांधने का स्थान ऐसा बनायें कि वह पीछे की ओर कुछ ढलान लिए हो ताकि पशु द्वारा त्याग किया गया मूत्र तत्काल उस स्थान से बह जाये और वहां दलदल न होने पाये। पशु बांधने के स्थान की नियमित रूप से सफाई करना चाहिए तथा सफाई के लिए कभी–कभी कीटाणुनाशक दवा के पानी से धुलाई करते रहना चाहिए, ताकि वहां उपस्थित कीड़े मर जायें।

जाड़े के मौसम में होने वाली बीमारियां, उसके लक्षण एवं बचाव के उपाय

1. जुकाम

लक्षण

- पहले शुरू में नेजलम्यूकोसा याने नाक की भीतरी झिल्ली सूखी रहती है, लेकिन बाद में काफी नेजल डिस्चार्ज होता है, जो शुरू में पतला होता है तथा बाद में पीला मवाद जैसा हो जाता है।
- नेजल डिस्चार्ज एक या दोनों नाक से हो सकता है, कम या ज्यादा भी हो सकता है और लगातार या कभी–कभी आ सकता है।
- नाक के मार्ग में रूकावट के कारण स्वाश लेने में तकलीफ होती है।
- नाक के अन्दर सूजन आ जाती है।
- कभी–कभी ज्वर यानी बुखार भी हो जाता है और पशु खाना पीना छोड़ देता है।

विषय वस्तु विशेषज्ञ (पशु चिकित्सा), राजा दिनेश सिंह कृषि विज्ञान केन्द्र, अवधेशपुरम (ऐंठू), कालाकॉकर, प्रतापगढ़

Bulletin No. 2008-09-21

मुद्रक : संदीप प्रिन्टिंग प्रेस, आलापुर

बचाव के उपाय

- पशु को गरम स्थान पर रखें।
- श्वास में रूकावट के कारण होने वाली तकलीफ कम करने के लिए नाक के छिद्र को साफ कर सलाइन सोलूशन से धोना चाहिए।
- गंधक का धुवा सुघानें से बहता हुवा जुखाम झर जाता है और ज्वर के लक्षण कम हो जाता है।
- गरम पानी में खाने वाला सोडा 20 ग्राम घोलकर दिन में दो बार पिलाना पशु के लिए लाभदायक होता है।
- इससे पशु ठीक न हो तो पशु चिकित्सक की सलाह पर एन्टीबायोटिक, एन्टीहिस्टामिनिक और एन्टीपायेरेटिक आदि दवा देना चाहिए।

2. निमोनिया

लक्षण

- इस रोग में पशु के श्वाश की गति तेज लेकिन कम गहरी रहती है।
- बाद में स्वाश लेने में तकलीफ होती है, पशु खुले मुह तथा जीभ बाहर निकालते हुए स्वाश लेते है।
- पशु काफी कम खाता है, पशु सुस्त रहता है और चलना फिरना कम कर देता है।
- पशु को हर समय बुखार रहता है।
- पीड़ित पशु कांपता है, फेफड़ों तथा पसलियों के दर्द के कारण पशु कराहता तथा छटपटाता है।
- 7 दिन तक लक्षण बढ़ने के बाद कम होने लगता है।

बचाव के उपाय

- सबसे पहले रोगी पशु को स्वस्थ पशु से अलग कर दें।
- पशु घर में हवा के आने–जाने की व्यवस्था हो।
- पशु को बोरी या कम्बल से ओढ़ा देना चाहिए।
- गंधक का धुंआ सुघाना चाहिए।
- पशु को नरम, स्वादिष्ट एवं शीघ्र पचने वाला आहार देना चाहिए।
- पशु चिकित्सक की सलाह पर एन्टीबायोटिक, एन्टीहिस्टामिनिक, लीवर स्ट्रैक्ट आदि देना चाहिए।

3. अफरा

लक्षण

- पशु का पेट फूल जाता है।
- अधिकतर शरीर का बायां भाग अधिक फूला रहता है।
- फूले हुए स्थान पर हाथ की अंगुली मारने से टब–टब की आवज आती है।
- पशु को श्वांस लेने में कठिनाई होती है।
- जुगाली बन्द हो जाती है तथा कभी–कभी पेट में दर्द भी होता है।

बचाव के उपाय

- इलाज का पहला गदम पेट में गैस को कम करने तथा उसे और नही बनने देना चाहिए।
- पशु को अफरा के दौरान चारा पानी कदापि न दें।
- पशु को ऐसा खड़ा रखें कि पिछला भाग नीचे तथ अगला भाग ऊँचाई पर हो ताकि डायफ्राम एवं फेफड़ों पर कम दबाव पड़े।
- यदि सम्भव हो तो पशु के मुह में एक लकड़ी डालकर बांध दें, जैसे घोड़े के मुह में मोहरा डालते है। इससे गैस बाहर निकलने में सुबिधा होगी और बार–बार मुह नही हिलाने से लार बाहर गिरने के बजाय अन्दर ही जायेगी जो गैस बनना कम करती है।
- पशु को 400–500 मिली0 सरसों के तेल और 30–60 मिली0 तारपीन का तेल मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।
- लिक्युड पाराफिन हाफ से एक लीटर पिलाने से भी पशु को आराम मिलता है।
- यदि पशु ठीक न हो रहा हो तो पशु चिकित्सक की सलाह लेना चाहिए।

जाड़े के मौसम में पशुओं को लगने वाले टीके

जाड़े के मौसम में गाय–भैस को एफ.एम.डी., ब्रूसेला आदि का टीका लगायें और भेड़ बकरियों में पी0पी0आर0 और ब्रूसेला का टीका लगायें।